PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-32 VOLUME-1 IMPACT FACTOR- IIJIF-8.712

ISSN-2454-6283 April-June, 2023

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

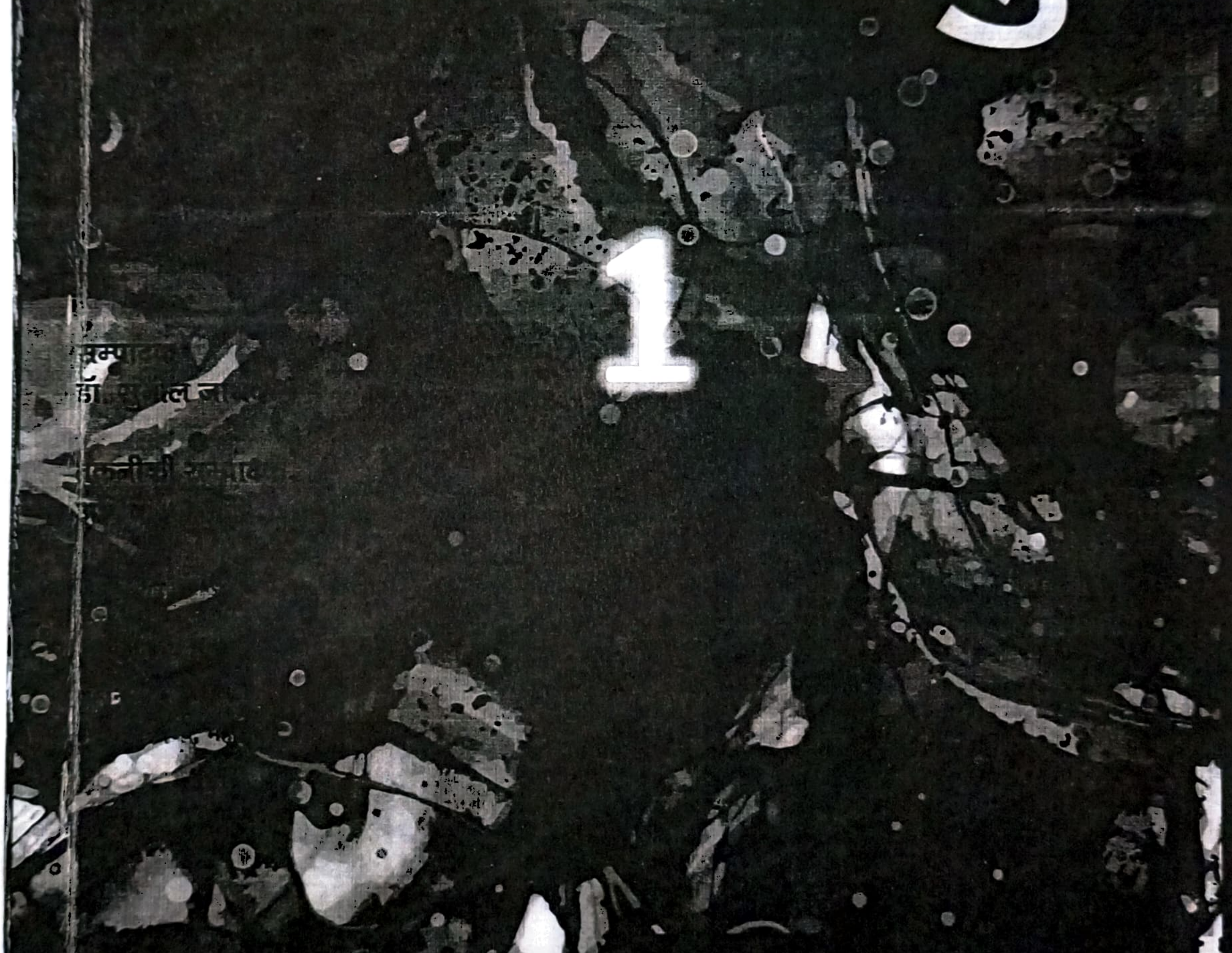

web:- www.shodhritu.com

Email - shodhrityu78@yahoo.com

WhatsApp 9405384672

शोध-ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

Open Transparent PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-32 **VOLUME-1** ISSN-2454-6283 **April-June–2023**

IMPACT FACTOR - **(IIJIF-8.712)** **(COSMOS– 2019-4.649)**

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

प्रकाशन / प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड–महाराष्ट्र

मुद्रण / मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com
वेबसाइट www.shodhritu.com

"शोध–ऋतु ' तिमाही पत्रिका में आलेख लेखक निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें ।
फॉण्ट–कृति देव 10 वर्ड फाइल में ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी ।
आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी ।
आलेख विशेषज्ञों द्वारा चयन किये जायेंगे ।
चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी ।
चयनित आलेख के लिए 1000रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा ।
लेखक मौलिक शोधपरक एवं वैचारिक आलेख ही भेंजे ।
व्हाट्स एप–9405384672

बैंक विवरण

NAME	SUNIL GULABSING JADHAV
BAINK	BANK OF MAHARASHTRA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA
ACCOUNT NO.	2015 8925 290
IFSC CODE	MAHB0000720

PhonePe

ACCEPTED HERE

Scan & Pay Using PhonePe App

or Pay to Mobile Number using PhonePe App

9405384672

Sunil Jadhav

वार्षिक पर

- प्रो .डॉ
- प्रो.डॉ.र
- प्रो.डॉ.रि
- प्रो.डॉ.अ
- प्रो.डॉ.न
- सौ.सवि
- प्रो.डॉ.म
- प्रो.डॉ.वि
- प्रो.डॉ.व
- प्रो.विवे

—¹प्रियंका नागर, ²डॉ.विनीता शर्मा......54
17.अखील भारतीय भक्ति आंदोलन और संत नामदेव......56
—प्रा.रामहरि काकडे......56
18.मिलेट्स (श्री अन्न) उत्पादन एवं उपभोग का कृषि अर्थव्यवस्था के विकास पर प्रभाव का विश्लेषण......58
—डॉ.जगेन्द्र धोटे......58
19.हिंदी शॉर्ट फिल्म 'दैट डे आफ्टर एवरिडे' में प्रदर्शित स्त्री छवि और उसके प्रति सामाजिक दृष्टिकोण......60
—अमित कुमार......60
20.मनोविश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक उपन्यासों का अभिव्यंजना शिल्प......63
—डॉ.रेनू जोशी......63
21.जन माध्यमों की प्रकृति में राष्ट्रीय संवेदना......66
—डॉ.लड्डू लाल मीना......66
22.नारी भूमिका : वैदिक संदर्भ में......68
—डॉ0मोनिका नरेश......68
23.आचार्य अभिराज राजेंद्र मिश्र विरचित "जानकीजीवनम्" महाकाव्यातील ऋतूवर्णन......71
—डॉ.मृदुला विजय काळे......71
24.उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य—सन्तुष्टि का अध्ययन......74
-डॉ.लक्ष्मण कुमार गुप्ता......74
25.छायावाद, हिंदी आलोचना और दिनकर......76
—डॉ.राजीव कुमार......76
26.हिन्दी काव्यों में प्रकृति—पशु—पक्षी स्रोतः संस्कृत काव्य......80
—डॉ.श्रवण कुमार......80
27.नवजागरण कालीन स्त्री केंद्रित पत्रकारिता और स्त्री दर्पण पत्रिका......83
—निधि शुक्ला......83
28.The Endless Journey of Hindi Story......86
-Dr. Raju C. P,......86
29.Politico-Legal Framework of Corporate Social Responsibility in India: Trends and Implications......88
-Shailendra Kumar Pathak......88
30.Skill Gap Assessment Of Rewa District......91
-Dr. Rakesh Tiwari......91

17.अखील भारतीय भक्ति आंदोलन और संत नामदेव

–प्रा.रामहरि काकडे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
महिला महाविद्यालय, गेवराई, जिला–बीड

भूमिका : संत समाज का हीत चाहते हैं। वे अपनी वाणी एवं कर्मों से समाज हीत की बात करते हैं। आखील भारतीय भक्ति आंदोलन एक ऐसा विशाल आंदोलन था जो मानवता की आधारशिला पर खड़ा था। इस आंदोलन ने प्रदेश की सीमाएं, भाषा, धर्म, जाति–पाती आदि की सभी सीमाओं को पार कर अखील भारतीय स्वरूप धारण किया। इस विशालकाय आंदोलन में मराठी संतों ने भी अपना योगदान दिया। संत नामदेव उन्हीं में से है। संत नामदेव ने मराठी के साथ–साथ हिंदी में भी पद रचना की। उनके पदों का संकलन सिखों का पवित्र ग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' में किया गया है। इतना ही नहीं तो उन्होंने महात्मा कबीर से पूर्व इस आंदोलन को विषय एवं शैली प्रदान की। इस संदर्भ में संत नामदेव महत्वपूर्ण है।

भक्ति आंदोलन के उद्भव के संदर्भ में विद्वानों में अलग–अलग मत है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के लिए वह बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है तो हजारी प्रसाद द्विवेदी उसे महज भारतीय परंपरा का अपना स्वतः स्पूर्त विकास मानते हैं। भक्ति आंदोलन के पूर्व धर्म अपनी सार्थकता खो गया था। वह अपनी जड़वादिता के कारण सामान्य मनुष्य के शोषण का शस्त्र बन गया था। धर्म के नाम पर समाज में विषमता फैलाकर अमानवीय व्यवहार हो रहा था। इस पृष्ठभूमि में ईसा की सातवीं शती में दक्षिण में अलवर भक्तों का आविर्भाव हो गया। आचार्य शुक्ल ने इनकी संख्या 12 बताई है। इन भक्तों ने पहली बार धर्म के जड़त्व को नष्ट करने का प्रयास किया। रूढिवादिता को नकार कर लोकभाषा में अपने आराध्य की आराधना की। इन आलवारों में शूद्रों के साथ 'आंडाल' नामक स्त्री भी थी। रामानुजाचार्य ने इन भक्त कवियों के पदों का संकलन 'दिव्य प्रबंधम' नाम से किया और शास्त्रीय पद्धति से सगुण ब्रह्मा का निरूपण किया। इसलिए इन्हें ही भक्ति, दर्शन और भावना का प्रवर्तक माना जाता है। भक्ति की यह लहर धीरे–धीरे देशव्यापी होती गई। लगभग इसी समय पूर्व में बंगाल के अंदर संस्कृत के प्रसिद्ध गीतकार जयदेव ने गीत गोविंद की रचना कर कृष्ण प्रेम से पूर्ण मधुर स्वर से भारतीय वातावरण को भर दिया। बिहार में मैथिल कोकिल विद्यापति का प्रादुर्भाव हुआ। गुजरात में नरसी महता, बंगाल में चैतन्य महाप्रभु, असम में शंकर देव और महाराष्ट्र में नामदेव, ज्ञानदेव, मुक्ताबाई भक्ति भावना का प्रसार कर रहे थे।

मराठी और हिंदी दोनों भाषाएं आर्य भाषा परिवार से है। मराठी संतो को हिंदी के प्रति सहज ममता रही है। आचार्य विनय मोहन शर्मा अपनी पुस्तक हिंदी को मराठी संतों की देन में लिखते हैं, 'मराठी साहित्य में संत शब्द व्यापक अर्थ में व्यवहार होता है वहा विष्णु के अवतार राम के उपासक तुलसीदास संत है और ब्रह्मा के प्रतीक राम का नाम स्मरण करने वाले निर्गुणी कबीर भी संत है वहा भक्त और संत के बीच कोई भेद नहीं माना गया।' मराठी साहित्य में भक्ति की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। नाथ संप्रदाय, महानुभाव संप्रदाय, वारकरी संप्रदाय, दत्त संप्रदाय एवं समर्थ संप्रदाय के माध्यम से भक्तिभावना समूचे मराठी साहित्य में व्याप्त हो गई है। आगे चलकर नाथ संप्रदाय प्रकारांतर से वारकरी संप्रदाय में विलीन हो गया। गुलाबराव हाडे अपनी पुस्तक 'मराठी संतों की दक्खिनी काव्य की सामाजिक फलश्रुतिः बहुलतावादी पाठ' इस पुस्तक में लिखते हैं कि 'हिंदी प्रदेश की संत काव्य परंपरा असल में मराठी संत काव्य परंपरा की ही एक विकसित शाखा का रूप है। लेकिन मूलतः महानुभव पंथ के संस्थापक स्वामी चक्रधर और वारकरी संप्रदाय (नाथ संप्रदाय) के संत ज्ञानेश्वर और नामदेव ने विभिन्न स्रोतों से प्राप्त विचार, भाव एवं शैली को नवीनतम रूप देकर दक्खन की मराठी ही नहीं, बल्कि उत्तर भारत की हिंदी संत काव्य परंपरा का मार्ग भी प्रशस्त किया। साथ ही यह बात सदैव स्मरण रखनी चाहिए कि, सिद्धों और नाथों की जो सैद्धांतिक विशेषताएं हिंदी संत–काव्य में पाई जाती है, वे मराठी संतों के माध्यम से ही उसमें सन्निहित है। इतना ही नहीं हिंदी संत काव्य परंपरा के प्रथम उद्गाता संत कबीर के अविर्भाव से बहुत पहले स्वामी चक्रधर, ज्ञानेश्वर, नामदेव, गोंदा, मुक्ताबाई आदि ने दक्खिनी में ऐसे–ऐसे पदों की रचना की थी, जिनमें शैली की दृष्टि से कबीर की पद– रचना से गहरा संबंध है। मराठी भक्ति आंदोलन के संदर्भ में तुकाराम ने निम्न पद रचना कि हैं, संतकृपा झाली। इमारत फळा आली ।।/ज्ञानदेवे रचिला पाया। उभारिले देवालया।। /नामा तयाचा किंकर। तेणें केला विस्तार।।/जनार्दन एकनाथ। खांब दिला भागवत।।/ तूका झाला से कळस। भजन करा सावकाश।। अर्थात संतों की कृपा हुई– यह इमारत पूरी हुई। ज्ञानदेव नींव रखी–मंदिर की रचना की। उनके भक्त सेवक नामदेव ने भवन का विस्तार किया। संत जनार्दन एकनाथ ने तथा भागवत–धर्म ने इस मंदिर के खंबे बनाए और इस भक्ति–मंदिर

का शिखर बने श्री संत तुकाराम। इसप्रकार इस रुपक में मराठी भक्ति के संबध जानकारी है।

संत नामदेव का जन्म 26 अक्टूबर 1270 ई.स. को उस्मानाबाद जिले के नरसी बामणी मराठवाड़ा के गांव में हुआ। उनके पिता का नाम दामा सेठ और माता का नाम कनोई था। उनका विवाह नौ वर्ष की आयु में ही हुआ। उनके पिता दामा सेठ परम विठ्ठल भक्त थे और प्रतिवर्ष विठ्ठल की वारी अर्थात यात्रा करते थे। घर में भक्ति भावना के कारण नामदेव के मन में बचपन से ही विठ्ठल के प्रति भक्ति भावना निर्माण हुई और वे पंढरपुर में जाकर विठ्ठल रुक्मिणी की सेवा में लीन हो गए। वहीं पर उनकी भेंट ज्ञानेश्वर एवं उनके भाई बहनों से हुई। उन्हीं की प्रेरणा से नामदेव ने विसोबा खेचर से गुरु दीक्षा ग्रहण की। उसके पश्चात वे ज्ञानेश्वर के साथ उत्तरी भारत की यात्रा पर चले गए। उत्तरी भारत की यात्रा से महाराष्ट्र में लौटने के बाद उनके सखा ज्ञानेश्वर ने आलंदी के पास समाधि ले ली। ज्ञानेश्वर के विरह से व्याकुल नामदेव पुनः उत्तर में पंजाब की ओर चले गए। पंजाब में घुमान नामक स्थल को उन्होंने अपनी कर्मभूमि बनाया। जहां पर आज भी नामदेव संप्रदाय लोगों की बस्ती है। वहां पर उनका एक मंदिर भी है। सन 2015 का अखील भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन इसी कारण पंजाब के घुमान में आयोजित किया गया था। सिख धर्म के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' में उनके कुल 61 पद संकलित किए गए हैं। इनके पदों में जात– पाँत, कर्मकांड एवं पाखंड का विरोध कर गुरु की आवश्यकता, ईश्वर का एकत्व, नामस्मरण का महत्व प्रतिपादित किया है।

ईश्वर का एक एकत्व : मराठी संतों में सगुन उपासक और निर्गुण उपासक ऐसा स्पष्ट भेद नहीं है। संत नामदेव पंढरपुर के विट्ठल को अपना आराध्य मानते थे। उनका विट्ठल कबीर के राम के समान चराचर में व्याप्त है। उनके पदों में ईश्वर के प्रति एकत्व का वर्णन किया गया है।/जहाँ तु गिरीवर तहां हम मोरा/जहाँ तुम चंदा तहा मैं चकोरा/जहाँ तुम तरुवर तहा मैं पंछी/जहाँ तुम सरवर तहाँ मै मच्छी/जहाँ तुम दीवा तहाँ मै बत्ती/जहाँ तुम पंथी तहाँ मै साथी।

गुरु की आवश्यकताः यह संसार रुपी भवसागर पार करने के लिए गुरु की आवश्यकता है। गुरु के उपदेश के अनुसार चलकर ही इस संसार से मुक्ति मिल सकती है। भक्ति के क्षेत्र में सदगुरु का महत्व अनन्य साधारण है। अगर अपने आराध्य विट्ठल को प्राप्त करना है तो उसका मार्ग सदगुरु के माध्यम से ही जाता है। इसलिए नामदेव ने गुरु की आवश्यकता का प्रतिपादन किया है, जउ गुरुदेऊ न मिलै मुरारी।/जउ गुरुदेऊ न उतरे पारि।।/जउ गुरुदेऊ न वायु टिडावे।/जउ गुरुदेऊ न यह दिस धावै।/जउ गुरुदेऊ त संसा टूटै।/जउ गुरुदेऊ त जमते छुटै।।

नामस्मरणः संत नामदेव नाम महिमा के अभंगों में विट्ठल के नाम महीमा का महत्व प्रतिपादित करते हैं। नामदेव की दृष्टि में विष्णु नाम की महिमा ब्रम्हदेव को भी समझ में नहीं आयी। यह नाम की महिमा शंकर ने समझने के कारण उन्होंने पत्नी उमा को नाम रहस्य बताया। जहां नामस्मरण रहता है वहां द्वैतवाद भेदभाव नहीं रहता। वह अपने आराध्य के साथ एकरूपता प्राप्त करता है।हरि हरि करत मीटे सभ भरमा।/बरिके (हरिके) नाम ले, उतम धरमा।/प्रणके नामा ऐसा हरि।/जासु जपत भै अपदा टरी।।

प्रेम की तीव्रताः संत नामदेव अपने आराध्य के प्रेम में व्याकुल है। अपने आराध्य के मिलन की तीव्रता उनमें इतनी है कि जिस प्रकार विषय वासना से युक्त होकर पर नारी से प्रेम कर तड़पता है उसी प्रकार नामदेव भी अपने आराध्य के लिए तड़प रहे हैं।कामी पुरख कामनी पिआरी।/ऐसी नामें प्रीति मुरारी। संत नामदेव भी कबीर के समान स्वयं को आराध्य की पत्नी मानकर अपनी प्रिय की राह देख रही है। मै बउरी मेरा राम भरतार/रचि रचि ताकउ करउ सिंगार। संत नामदेव अपने आराध्य के प्राप्ति के लिए इतने व्याकुल हुये है कि उन्होंने लोक लाज का त्याग किया है। वे कहते हैं कि अब ऐसा समय आया है कि आराध्य की विरह के कारण मेरी जान चली जा सकती है, भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु/तनु मनु राम मिआरे जोगु। बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै,/रसना रामु रसा इनु पीजै।/अब जीउ जाति ऐसी बनि आई,/मिलऊ गुपाल नीसानु बजाई।

देह नश्वरताः संत नामदेव देह की नश्वरता का प्रतिपादन कर कहते है कि, संसार माया जाल है और मन को इस माया जाल रूपी पिंजरे में नहीं पडना चाहिए।मनुष्य को शरीर और सौंदर्य पर कभी भी गर्व नहीं करना चाहिए क्योंकि एक दिन सभी को मरना ही है। मन पंछी या मत पड पिंजरे।/संसार माया जाल रे।।/तन जोबन रुप कारण।/न कर गर्व गवार रे।। अतः मनुष्य को अपने आराध्य का सेवक बन कर आराधना करनी चाहिए। सामाजिक आरोग्य के लिए वे कहते है कि, व्यक्ति को सदा संत संगती में रहना चाहिए। संत संगती से कठीण संकट भी टल जाते है।

हिंदू–मूस्लिम दृष्टिकोणः संत नामदेव संत ज्ञानेश्वर के साथ उत्तरी भारत की यात्रा पर गए थे। उत्तरी भारत की यात्रा से लौटने के बाद जब संत ज्ञानेश्वर ने समाधि ली तब उनके वीरह से व्याकुल होकर संत नामदेव पुनः पंजाब की ओर चले गए। तब उत्तर भारत में मुसलमानों का राज था। उत्तरी भारत में हिंदू और मूस्लिम संघर्ष चल रहा था। मुसलमान के शासन में उन्हें जो विसंगतियां दृष्टिगत हुई उन विसंगतियों पर उन्होंने प्रहार किया है। ऊन्होने केवल मुसलमानों पर ही प्रहार नहीं किया तो बल्कि हिंदुओं को भी नहीं बख्शा। संत कबीर के समान वे हिंदू और मुसलमानों की विसंगतियों पर प्रहार करते दिखाई देते हैं,हिंदू अंधा तुरकू काना दोहा ते गिआनी सिआणा।।/हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीत।।/नामें सोई सेविआ जह देहुरा न मसीत।। इस प्रकार उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों की धार्मिक

को फटकार लगाई है। वह धार्मिक कट्टरता को कम कर मानवता को महत्व देना चाहते थे।

जात–पाँत विरोधः संत कौन सी भी धर्म का क्यों ना हो उसका एक ही धर्म रहा है मानवतावाद। भक्ति आंदोलन का उदय ही सामान्य जन के लिए हुआ है समाज के उच्च वर्णीयों ने धर्म एवं धर्म ग्रंथों के सहारे ईश्वर को अपने तक सीमित रखा। ईश्वर को इन उच्च वर्णीयों से मुक्त कर आमजन को ईश्वर तक या ईश्वर को आमजन तक पहुंचाने के लिए संतों ने कार्य किया। फिर वह जन भाषा में ग्रंथों का सृजन हो या फिर सीधे धार्मिक और सामाजिक आवडंबरो का खंडन हो। जो भी करना पड़े संतों ने अपने–अपने पद्धति से कर समाज के आमजन का जीवन सुलभ करने का कार्य किया। इसमें धार्मिक एवं सामाजिक आवडंबरों को उधवस्त करना आवश्यक था। संत नामदेव तो उत्तरी भारत की यात्रा कर चुके थे। उन्होंने यात्रा के समय जो देखा उसमें भारत में सामाजिक एवं धार्मिक संघर्ष महत्वपूर्ण था। जिस प्रकार हिंदू मुस्लिम संघर्ष चल रहा था उसी प्रकार हिंदुओं के अंदर भी ऊंच–नीच की भावना बलवती हो गई थी। समाज के उच्च वर्ण के लोग निम्न जाति के लोगों को मानव मानने को तैयार नहीं थे। ऐसे समय में संत नामदेव ने जाती – पाती पर प्रहार करना प्रारंभ किया। सभी संतों का कहना था कि ईश्वर को सभी प्राप्त कर सकते हैं उसके लिए उच्च जात की आवश्यकता नहीं तो शुद्ध भाव की आवश्यकता है। इस संदर्भ में नामदेव कहते हैं, कहा करूँ जाती काहाँ करू पाती/राजा राम सेऊँ दिन राती।/मन मेरो गंगा मन मेरो कासी/राम रम काटूँ जम की फांसी।।

सारांशः अखील भारतीय भक्ति आंदोलन के संदर्भ में मराठी संतों की महत्वपूर्ण देन है। हिंदी साहित्य में भक्ति साहित्य की जो धारा प्रवाहित हुई उससे भी पहले महाराष्ट्र में भक्ति साहित्य लिखना प्रारंभ हुआ था। ऐसे बहुत से सारे तत्व है जो हिंदी साहित्य में मराठी साहित्य से आए हुए हैं। संत नामदेव कबीर से पहले हुए। कबीर में नामदेव की विषय एवं शैली दृष्टिगत होती है। संत नामदेव ने संत ज्ञानेश्वर के साथ एवं उनके समाधि लेने के पश्चात भी उत्तरी भारत की यात्रा कर हिंदी पदों का निर्माण किया। जिसका अंतर्भाव सिक्खों का पवित्र ग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' में किया गया है। इन्होंने अपने पदों में ईश्वर का एकत्व, गुरु की आवश्यकता, नामस्मरण, प्रेम की तीव्रता, देह की नश्वरता, हिंदू–मुस्लिम दृष्टिकोण, जाति–पाति विरोध पर पदों का सृजन कर तत्कालिक समस्याओं को सुलझाने का काम किया है।

संदर्भ सूचीः–(1)हिंदी को मराठी संतों की देन–आचार्य विनय मोहन शर्मा (2)मराठी संतों की दक्खिनी काव्य की सामाजिक फलश्रुतिः बहुलतावादी पाठ–गुलाबराव हाडे (3)मराठी संत काव्य–प्रा.वेद कुमार विद्यालंकार(4)भक्तिकालीन काव्य में मानवीय मूल्य–डॉ.हणमंतराव पाटील(5)हिंदी साहित्य की भूमिका–हजारी प्रसाद द्विवेदी(6)भक्ति काव्य यात्रा–रामस्वरूप चतुर्वेदी

18.मिलेट्स (श्री अन्न) उत्पादन एवं उपभोग का कृषि अर्थव्यवस्था के विकास पर प्रभाव का विश्लेषण

–डॉ.जगेन्द्र धोटे
सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र,
शासकीय महाविद्यालय भैंसदेही जिला–बैतूल म.प्र.

प्रस्तावना — मोटे अनाजों को श्री अन्न (मिलेट्स) कहा जाता है भारत में प्राचीनकाल से ही मोटे अनाजों का उत्पादन एवं उपभोग किया जाता रहा है मोटे अनाज (मिलेट्स) पोषक तत्वों से भरपूर होते है। मोटे अनाजों पौष्टिक गुणों से भरपूर होने के कारण यह मानव को कुपोषण तथा विभिन्न रोगों से बचाते हैं इन मोटे अनाजों में बाजरा,ज्वार, कोदो, कुटकी,रागी, मक्का, सांवा, कंगनी, चीना और कुट्टू के दाने आदि शामिल है। भारत ज्वार बाजरा तथा अन्य मोटे अनाजों का प्रमुख उत्पादक है कृषि में महंगे रासायनिक पदार्थों के प्रयोग के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि होने के कारण कृषि उत्पादन में लाभदायकता में कमी आ रही है तथा कृषकों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो रही है अतः कृषि में ऐसी फसलों के उत्पादन की आवश्यकता है जिन फसलों की उत्पादन लागत कम हो, उत्पादन पर मौसम का कम प्रभाव हो, जिनके प्रयोग से पर्याप्त पोषण प्राप्त हो तथा रोगों से रक्षा संभव हो साथ ही जो कृषि लागत को कम करते हुए कृषकों की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में सक्षम हो इन सभी आवश्यकताओ की पूर्ति श्री अन्न के उत्पादन से संभव हो सकती है। मोटे अनाजों के उत्पादन में अन्य कृषि उपजों की तुलना में कम लागत आती है इसके अतिरिक्त मोटे अनाजों का उत्पादन मौसम से भी अधिक प्रभावित नहीं होता है । अतः श्री अन्न का उत्पादन कृषकों की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में सहायक हो सकता है।

वर्तमान में प्रचलित खानपान के अंतर्गत भोजन में पोषक तत्वों की कमी, कृषि में लागतों में निरंतर वृद्धि तथा बदलते वैश्विक पर्यावरण जैसी परिस्थितियों आदि जैसे विभिन्न कारकों को ध्यान में रखते हुए भारत में वर्ष 2018 में मोटे अनाजों को पोषक आहार घोषित किया गया। भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र के समक्ष रखे गए प्रस्ताव को मंजूरी मिली तथा वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित किया गया। भारत में बजट 2023 – 24 में वित्त मंत्री ने मोटे अनाजों को श्री अन्न से संबोधित करते हुए प्रावधानों के विषय में बताया गया। जी 20 सम्मेलन में मोटे अनाजों से बने विभिन्न व्यंजनों को अतिथियों के